



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 10 (अक्टूबर, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

पशुपालन में कृमिनाशन और टीकाकरण का महत्व

*शुभम अस्थाना, कृतिका पटेल, कंचन कुशवाहा, रूपम सचान एवं मंजू साहू

श्री गंगानगर वेटेनरी महाविद्यालय, टंटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: asthanashub@gmail.com

पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उनकी देखभाल अत्यंत आवश्यक है। इसमें कृमिनाशन और टीकाकरण दो ऐसे महत्वपूर्ण पहलू हैं जो न केवल पशुओं को बीमारियों एवं किसानों को आर्थिक नुकसान से भी बचाते हैं। कृमिनाशक दवाइया आंतरिक परजीवियों को नियंत्रित करती है जो पशुओं के विकास, दूध उत्पादन और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं, जबकि टीकाकरण प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करके संक्रामक रोगों से बचाता है।

कृमिनाशन का महत्व:

कृमि (आंतरिक परजीवी) पशुओं के शरीर में पनपकर उनके पोषण को अवशोषित कर लेते हैं, जिससे पशु कमजोर हो जाते हैं और उनकी उत्पादकता (दूध, मांस, अंडा आदि) पर प्रभाव पड़ता है। उत्पादन और प्रजनन में सुधार के लिए पशुओं को समय-समय पर कृमि मुक्त करना आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है। सबसे अनुकूल समय गर्मियों की शुरुआत (अप्रैल-मई) और सर्दियों के मौसम (अक्टूबर-नवंबर) से पहले होता है। पशुओं पर आंतरिक परजीवियों के नकारात्मक प्रभाव के जोखिम को कम करता है।

आंतरिक परजीवी समूहों (राउंडवॉर्म, टेपवर्म, फ्लूक वर्म) में से, 2 वयस्क पशुओं में प्रमुख महत्व रखते हैं:

1. राउंडवॉर्म से होने वाले नुकसान:

- वजन में कमी
- खराब फीड दक्षता
- गायों में दूध उत्पादन में गिरावट और प्रजनन अक्षमता

हालांकि वयस्क पशुओं में राउंडवॉर्म प्रजातियों के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर सकते हैं, लेकिन इन परजीवियों का उत्पादन पर प्रभाव पड़ सकता है, खासकर जब पशु तनावग्रस्त होते हैं। तनाव में संक्रमण काल (बछड़े के जन्म से ठीक पहले और बाद में), साथ ही पोषण (कम गुणवत्ता मात्रा फीड) और पर्यावरण (सूखा और चरम मौसम) से संबंधित तनाव शामिल हो सकते हैं।

2. दूसरी ओर, लिवर फ्लूक इस हद तक लिवर को नुकसान पहुंचाता है कि:

- पशु को ऊर्जा और प्रोटीन से वंचित करता है (प्रजनन क्षमता और विकास की हानि)
- ट्रेस मिनरल की भंडारण क्षमता को सीमित करता है, और सबऑप्टिमल ट्रेस-मिनरल स्तरों (क्षीण प्रतिरक्षा, प्रजनन और उत्पादन) की ओर ले जाता है

सही समय पर सही डीवर्मर्स का उपयोग सफल चराई कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आंतरिक परजीवी पशु की पोषण स्थिति को तीन तरीकों से प्रभावित करते हैं: चारा सेवन को कम करते हैं, पोषक तत्वों के अवशोषण को कम करते हैं, और वे पोषक तत्वों की आवश्यकताओं को बढ़ाते हैं। टेपवर्म, फ्लूक, राउंडवर्म और अन्य आंतरिक परजीवी मवेशियों के समग्र स्वास्थ्य पर खतरनाक प्रभाव छोड़ते हैं। कृमि मुक्ति आपके पशुधन को स्वस्थ रखने में मदद करती है और अंततः आपके डेयरी फार्मिंग व्यवसाय को फलने-फूलने में सहायता करती है।

लाभ:

- पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि
- पशुओं के वजन और दूध उत्पादन में वृद्धि
- प्रजनन क्षमता में सुधार
- आंतरिक संक्रमणों से बचाव

सुझाव: हर 3 से 6 महीने में पशुओं को कृमिनाशन दवा, देनी चाहिए, विशेषकर बरसात के मौसम के बाद।



टीकाकरण का महत्व

मनुष्यों की भांति पशुओं में भी रोग प्रतिरक्षा हेतु टीकाकरण अत्यंत आवश्यक है। पशुओं को टीका लगाने से रोग उत्पन्न किए बिना प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करने में मदद मिलती है। यह न सिर्फ उन्हें सुक्ष्म जीवियों के संक्रमण से बचाता है बल्कि विभिन्न बीमारियों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता भी प्रदान करता है। पशुओं में विभिन्न रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण उचित समय पर, उचित मात्रा में, उचित जगह पर, उचित मार्ग से तथा उचित टीकों के प्रयोग अनिवार्य है। सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करने, पशुओं की पीड़ा को कम करने, और खाद्य और साथी पशुओं के इलाज के लिए एंटीबायोटिक दवाओं की आवश्यकता को बहुत कम करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है और आगे भी निभाते रहेंगे। टीकाकरण के द्वारा कमजोर या मृत रोगाणुओं को शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है जिसका उद्देश्य उस विशेष रोगाणुओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करना या बढ़ाना है। जब पशुओं की अच्छी तरह से देखभाल नहीं की जाती है, तो इससे रोगों के प्रति उनकी प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है और पशु कई रोगों की चपेट में आ सकते हैं। टीकाकरण पशुओं से मनुष्यों में और एक पशु से दूसरे पशु में संक्रामक पशु रोगों (जूनोटिक रोगों) के संचरण और प्रसार को रोकने में कुशल हैं। टीका पशुओं की बीमारियों को रोकने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक लागत प्रभावी विधि है वे आम तौर पर सुरक्षित, कुशल होते हैं। वे दीर्घकालिक रोकथाम के लिए अच्छे हैं क्योंकि पशुओं को उन बीमारियों से बचाया जा सकता है जिनकी कीमत टीकों की लागत से ज्यादा हो सकती है।

बीमार एवं तनावग्रस्त पशुओं का टीकाकरण नहीं करना चाहिए क्योंकि टीका प्रभावी नहीं होगा।

प्रमुख बीमारियाँ जिनका टीकाकरण आवश्यक है

- गलघोंटू
- खुरपका—मुंहपका
- ब्रूसेल्लोसिस
- ब्लैक क्वार्टर
- रैबीज

टीकाकरण के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें

- टीकाकरण का समय
टीकाकरण का समय पशुओं की उम्र, स्वास्थ्य और स्थानीय रोग के जोखिम पर निर्भर करता है
- टीकाकरण की विधि
टीके का इंजेक्शन पशुओं की त्वचा के नीचे या मांसपेशियों में दिया जाता है।
- टीकाकरण के बाद पशुओं का ध्यान
टीकाकरण के बाद पशुओं को कुछ समय के लिए आराम और विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है

लाभ

- जानलेवा बीमारियों से बचाव
- पशुधन हानि में कमी
- मानव स्वास्थ्य की रक्षा (जूनोटिक रोगों से)
- पशुओं की जीवन अवधि में वृद्धि

टीकाकरण पशुओं के लिए बहुत ही लाभदायक है, क्योंकि यह अनमोल पशुधन को असमय मृत्यु से बचाता है।

गाय और भैंसों का टीकाकरण

बीमारी	टीकाकरण की आयु	प्रतिरक्षा की अवधि
गलघोंटू	6 महीने	1 वर्ष
ब्लैक क्वार्टर	6 महीने	1 वर्ष
खुरपका—मुंहपका	6 महीने	1 वर्ष
ब्रूसेल्लोसिस	4 से 8 महीने केवल मादा बछड़े में	

पशु चिकित्सक की भूमिका

एक योग्य पशु चिकित्सक की देखरेख में टीकाकरण और कृमिनाशन करवाना अत्यंत आवश्यक है। वह पशु की उम्र, स्वास्थ्य स्थिति और मौसमी प्रभाव के आधार पर सही समय व मात्रा निर्धारित करता है।

निष्कर्ष

कृमिनाशन और टीकाकरण, पशुपालन में दो ऐसे स्तंभ हैं जो न केवल पशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं, बल्कि किसानों की आय और पशुधन की गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करते हैं। यह एक निवेश है जो लंबे समय में अधिक लाभ देता है। टीकाकरण, जानवरों को खतरनाक संक्रामक बीमारियों से बचाने का प्रभावी तरीका है। इससे न केवल पशु सुरक्षित रहते हैं, बल्कि बीमारी फैलने की संभावना भी कम हो जाती है। अतः पशु पालक को बिना संकोच के अपने सभी पशुओं का टीकाकरण करवाकर उनकी स्वस्थता को सुनिश्चित करना चाहिए।

